अध्याय-2

# आरुणि

प्राचीन समयमे भारतमे आइ काल्हि जेकाँ पढ़बाक लिखबाक व्यवस्था नहि छलैक। तहिया विद्यार्थी गुरुक आश्रममे जाय रहय। ओतहि राति दिन गुरुक सेवा करैत पढ़य लिखय। गुरुक आज्ञा मानब विद्यार्थीक पहिल कर्तव्य रहैक। विद्यार्थी सब कोन प्रकारेँ गुरुक आज्ञाकारी रहय तकर अनेक कथा छैक। आरुणिक कथा ओहि सबमे बड़ प्रसिद्ध अछि।

आरुणि गुरुक आश्रममे रहि पढ़ैत रहय। आनो कय गोट बालक ओहि आश्रममे ओकरहि जेकाँ रहय। गुरु जे अढ़बथिन्ह से सब करैत जाय।

गुरुकेँ खेत रहनि मुदा ओहि वर्ष वर्षा बिनु खेत रोपल नहि भेल रहनि। एक दिन भोरहिसँ वर्षा होअय लगलैक। गुरु वर्षासँ प्रसन्न तँ भेलाह मुदा मन पड़लनि जे खेतक आरि काटल अछि। जँ बान्हि नहि देबैक तँ पानि बहि जायत। तखन रोपनी नहि भय सकत। ई बिचारि ओ आरुणिकेँ कहल–

हओ आरुणि, जाह, खेतक आरि बान्हि आबह जे वर्षाक पानि खेतसँ बहि नहि जाय।

आरुणि बिदा भेल। खेत जाय ढेप चेपसँ आरि बान्हय लागल मुदा खेतक पानि ततेक वेगसँ बहैत रहैक जे आरि बान्हल नहि होइक, ढेप–चेप भसिआय जाइक।

आरुणि बड़ चिन्तामे पड़ल। की करत, की नहि। अन्तमे ओ अपनहि जेमहर दय पानि बहैत रहैक ताहि ठाम पड़ि रहल। अपना देहसँ पानि बहब रोकि ओतहि पड़ल रहल।

जखन बुनछेक भेल तखन गुरु आओर चटिआ केँ संग लय खेत गेलाह। खेत पानिसँ भरि गेल रहनि। बड़ प्रसन्न भेलाह। मुदा आरुणिकेँ तकथिन्ह तँ भेटनि नहि। गुरुकेँ बड़ चिन्ता भेलय जे आरुणि कतय गेल। चिकरि–चिकरि गुरु आरुणिकेँ सोर करय लगलथिन्ह।

आरुणि उत्तर देल–गुरु, हम आरि पर पानि रोकने पड़ल छी। उठब कोना।

आरुणिक उत्तर सूनि गुरु ओकरा लग गेलाह। ओतय गुरु देखल जे आरुणि आरि बनल जाड़सँ थर-थर कँपैत पड़ल अछि। गुरु ओकरा उठाय हृदयसँ लगा लेल। आश्रम लय जाय गुरु आगि पजारि आरुणिक सेवा शुश्रूषा करय लगलनि। प्रसन्न भय गुरु आरुणिकेँ आशीर्वाद देल।

"आरुणि, तोँ हमर आज्ञाक एहि तरहेँ पालन कयलह। तोँ बड़ विद्वान होएबह। तोँ तेहन नामबर होएबह जे तोहर नाम कहिओ लोक बिसरत नहि।"

**मै. शि. सा.**

## प्रश्न ओ अभ्यास

1. एहि प्रश्न सभक उत्तर दिअ
   - (क) गुरु आरुणिकेँ की आज्ञा देलनि ?
   - (ख) आरुणि गुरुक आज्ञाक पालन कोना कयलक ?
   - (ग) पहिने भारतमे विद्यार्थी कोना पढ़य ?
   - (घ) आरुणिकेँ गुरु की आशीर्वाद देलथिन ?
2. सही वाक्य पर सही (√) एवं गलत वाक्य पर गलत (×) केर निशान लगाउ।
   - (क) गुरुक आज्ञा मानब विद्यार्थीक कर्त्तव्य नहि रहै। ☐
   - (ख) वर्षा भेलासँ गुरु प्रसन्न भेलाह। ☐
   - (ग) आरुणि खेत पर जाय सुस्ताय लागल। ☐
   - (घ) आरुणि खेतक आरिक बीच पड़ि रहल। ☐
   - (ङ) आरुणिक कार्यसँ गुरु बड़ प्रसन्न भेलाह। ☐

3. निम्नलिखित शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू।

अढ़ायब, आरि बान्हब, रोपनी, थर-थर काँपब, हृदयसँ लगायब।

4. निम्नलिखित शब्दक अर्थ कहू–

व्यवस्था, आश्रम, आज्ञाकारी, कर्त्तव्य, वेग, बुनछेक, चटिया, सेवा, आशीर्वाद।

5. (क) छात्र ओ शिक्षकसँ सम्बन्धित कोनो आन रोचक कथा जँ अहाँकेँ स्मरण अछि तँ वर्गमे सुनाउ।

(ख) विद्यालयमे आरुणिक कथा पर आधारित संगी सभक संग अभिनयक आयोजन करू।

6. शब्दार्थ–

आश्रम–ऋषि मुनिक आवासीय घर

आज्ञा–आदेश

अढ़बथिन्ह–काजक आदेश देथिन्ह

आरि–मेड़

रोपनी–धान रोपब,

बुनछेक–बुन्दाबुन्दी बन्द होयब

चिकरि-चिकरि–जोर-जोर सँ बाजि कय

सेवा-सुश्रूषा–सेवा-टहल

नामबर–प्रसिद्ध